

अत्याज्य वि. (तत्.) न छोड़ने योग्य, जिसे त्यागा न जा सके।

अत्यानंद पुं. (तत्.) आनंद का परम उत्कृष्ट आध्यात्मिक रूप, परमानंद।

अत्याय पुं. (तत्.) 1. सीमा का उल्लंघन 2. मर्यादा अतिक्रमण 3. अधिक आय या लाभ।

अत्यारूढ़ वि. (तत्.) 1. बहुत ऊँचे पद पर बैठा हुआ 2. अत्यधिक प्रसिद्ध।

अत्यारूढि स्त्री. (तत्.) 1. बहुत ऊँचा पद 2. अभ्युदय।

अत्यालोचना स्त्री. (तत्.) किसी बात या कार्य के गुण, दोष आदि के संबंध में अत्यधिक विचार या टीका-टिप्पणी।

अत्याश्रम पुं. (तत्.) संन्यासाश्रम वि. संन्यासी, परमहंस, ब्रह्मचर्यादि आश्रम-धर्मों का पालन करने वाला।

अत्याहत वि. (तत्.) दुर्घटना आदि में बहुत अधिक घायल या चोट खाया हुआ या जख्मी।

अत्याहत विभाग पुं. (तत्.) अस्पताल, युद्ध क्षेत्र आदि का वह विभाग जहाँ अत्याहत व्यक्तियों की देखभाल आदि की जाए।

अत्याहारी वि. (तत्.) बहुत अधिक खाने वाला, भोजन भट्ट।

अत्युक्त वि. (तत्.) बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया, अत्युक्तिपूर्ण।

अत्युक्ति स्त्री. (तत्.) बहुत बढ़ा-चढ़ा कर किया वर्णन या कथन, अतिशयोक्ति।

अत्युद्य वि. (तत्.) 1. अति प्रचंड 2. बहुत भयानक पुं. हींग।

अत्युच्च वि. (तत्.) बहुत अधिक ऊँचा या श्रेष्ठ, अत्युत्तम।

अत्युत्तम वि. (तत्.) अधिक उत्कृष्ट, बहुत अच्छा, अति श्रेष्ठ।

अत्युत्पादन पुं. (तत्.) बहुत अधिक उपज या उत्पादन, सामान आदि का बहुत अधिक उत्पादन होना या करना।

अत्र अव्य. (तत्.) यहाँ, इसमें।

अत्रस वि. (तत्.) निडर, डर रहित, भय-रहित पुं. भय का अभाव।

अत्रस्त वि. (तत्.) निर्भीक, भयरहित; निडर।

अत्रि पुं. (तत्.) सप्तऋषियों में से एक जो ब्रह्मा के पुत्र माने गए हैं।

अत्रिगुण वि. (तत्.) त्रिगुणातीत, सत्त्व, रज, तम तीनों गुणों से भिन्न।

अत्रिज पुं. (तत्.) अत्रि के पुत्र-चंद्रमा (सोम), दत्तात्रेय तथा दुर्वासा।

अत्रिजात पुं. (तत्.) अत्रि के पुत्र-चंद्रमा, दत्तात्रेय तथा दुर्वासा।

अत्री स्त्री. (तत्.) कर्दम मुनि की कन्या अनसूया जो अत्रि ऋषि को ब्याही गई थी पुं. अत्तृ राक्षस, बहुभक्षी।

अत्रैगुण्य पुं. (तत्.) त्रिगुण का अभाव, सत्, रज, तम आदि तीनों गुणों का अभाव, त्रिगुणातीत, त्रिगुण से परे होने की अवस्था, ऐसे ही, अथच, इसी प्रकार।

अत्र्य वि. (तत्.) निर्लज्ज/लज्जाहीन, बेशर्म, दुःशील, प्रगल्भ, उजड़, उद्धत, अशिष्ट, धृष्ट, शील रहित।

अत्र्यस्थ वि. (तत्.) यहाँ पर स्थित; यहीं रहने वाला, इसी स्थान का निवासी।

अथ अव्य. (तत्.) 1. आरंभ 2. मंगलसूचक शब्द, जिससे किसी ग्रंथ या रचना का आरंभ किया जाता था 3. अब 4. तब 5. अनंतर 6. अगर मुहा. अथ से इति तक- आदिसे अंत तक, संपूर्ण।

अथक वि. (तत्.) जो कभी न थके, अश्रान्त।

अथ च अव्यय. (तत्.) और, और भी।